Subject- Maithili (IV th semester)
Paper code- CC-15, MTL 541
Topic - Yathaarthavaadee Kavita

Format- PDF

Name/contact- Dr. Sudhir Kumar Jha
Department of Maithili
Patna University
Mobile - 9661819662
email- drsudhirkrsha1170@gmail.

Scanned with CamScanner

यथार्थवादी कविता

मैथिली काव्य- कानन मे मूल रूपेँ यथार्थवादक प्रवर्तक छथि : श्री वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'। यद्यपि मैथिली काव्य मे यथार्थवादी तत्वक समावेश कवीश्वर चन्दा झाक रचना सँ होमए लागल छल मुदा ओहन रचना केँ यथार्थवादी साहित्यक अन्तर्गत नहि राखल जाए सकैत अछि। ओहि मे विषयक नवीनता, नव आयाम, जनजीवनक प्रति झुकाव एवं प्रगतिशीलता तँ अवश्य अछि परन्च दृष्टि पारम्परिके। एहिना भुवनजी आ कविवर सीताराम झाक रचना केँ सेहो प्रगतिशील रचना कहल जाए सकैत अछि, यथार्थवादी नहि। यात्रीक यथार्थवाद वस्तुत: एकर परिभाषाक संग जुड़ल अछि। कवि यात्री बिनु कोनो भय संकोच ओ पक्षपात कएने सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक आओर पारम्परिक सत्यक यथार्थ चित्र उतारने छथि। ओ एतेक यथार्थवादी छथि जे अपन पारिवारिक जीवनक रहस्यपर्यन्त केँ गुप्त नहि राखि अपन विवशता स्वीकारने छथि—

हमरा तिनिए कट्ठा खेत अछि बउआ; धन्य हिन्दी जे पाँच- दजो जोराक पेट चलइए! से हिन्दीओ जाँ लिखइ छी, तएँ निमहइए, ने त' अगबे कविवर भेने चाहिओ दिनुका खोरिस की जुमइत?[1]

एहन यथार्थवादी व्यक्तित्व रखनिहार 'यात्री' आजुक राधाक कतेक यथार्थ वर्णन कएने छथि, से द्रष्टव्य अछि—

गोर - गहुमा काँति
देह नमहर आ सुरेबगर
मूँह कटगर
ठोर लालेलाल
— — — — —
हरित वसना आइ काल्हुक राधिका
देवि स्कूटरवाहिनी, घुरि आउ संध्याकाल
कोनो होटल मध्य बाट तकैत छथि बाँकेबिहारी लाल[2]

एहिना 'गोठबिछनी' शीर्षक पद्य मे वनगोइठा बिछैत बीत भरिक नेनाक यथार्थ चित्रण कएने छथि—

मैल पुरान पचहत्थी नूआ
सेहो फाटल चेफड़ी लागल
— — — — —
बगड़ा जेना लगाबए खोंता
तेहने रुच्छ केश दउ तोहर
— — — — —
माथक ठार, शौद बड़सारक
तोरा लेखे बड़नी धन सन[3]

Scanned with CamScanner

समाज मे सुरसाक मुँह सदृश पसरल स्वार्थपरता एवं भ्रष्टाचारक यथार्थ वर्णन करैत कवि कहैत छथि—

> बनिञा-लीडर-अफसर तीन त्रिमूर्ति
> क रहला अछि अपन मनोरथ-पूर्ति
> अपना लए सभ अनका हेतु बटोर
> तइपर फाटन्हि रहि रहि कते दुकौर[4]

शहरुआ जीवनक प्रसंग कविक निम्न उक्ति यथार्थताक बोध करबैत अछि—

> शहर शहर मे फुजल सिनेमा
> क्यो नहि सुनए पुरान[5]

कवि यात्रीक रचना मे वर्णित यथार्थ लोकक बुद्धि ओ मन पर एक छाप छोड़ि जाइत अछि। वस्तुजगतक उपादान सर्जकक मन पर जे छाप छोड़ैत अछि तकर उपयोग ओ अपन दृष्टिक अनुरूप करैत अछि। प्रकृति एवं मानवक अस्तित्व कैं 'परम सत्य' मानैत ओ कहि उठैत छथि—

> सत्य थिक ई हाथ
> सत्य थिक ई देह[6]

यात्रीक यथातथ्य वर्णन मे सर्वत्र एकटा व्यंग्य निहित रहैत अछि जे समाज मे प्रचलित विद्रूपता, कुरीति आदि कैं ठिकिआ आँगुर देखबैत सुधारक दिशा मे गतिशील रहैत अछि।

यथार्थवादीक आँखि करवनो आकाश दिश नहि उठैत छैक, सदिखन भूमिए कैं तकैत रहैत अछि, ओकर कान धरतीक धुकधुकी सुनैत अछि, ओकर नाक माटिक ढ़ेप कैं सुँघैत अछि। माटिकर 'भूमि-पुत्र' कैं कतेक स्वाभाविक, कतेक जीवन्त ओ कतेक यथार्थ रूप मे शब्दानुकृत 'बहेड़' ठाढ़ करने छथि, से देखल जाए सकैत अछि—

> कारी धथूर, मुनकुट्ट बूढ़ अनमन तेकठी सन डाँड़ टुटल
> लै कर कोदारि, अड़का ओदाड़ि के रहल खेतमे मुकल-मुकल?
> देखही, करियौतिक ढ़ेप जकाँ दून कानहपर ई ढेला
> मटिकटनीमे, मटिउघनीमे मेलैक-जेना खूडक मेला[7]

मुसहरक पारिवारिक स्थिति, ओकर बाल-बच्चाक सुख-सोहन्ता, इच्छा-आकांक्षाक अभिव्यक्ति मे यथार्थवादक रूप कैं जे ओटा-चाही से साफ-साफ दिनक इजोत मे नाचल माछिसा जकाँ देखि सकैत छी—

Scanned with CamScanner

पशुगे पाठी पोसैछ एक
पोसियाँ परन्तु से पड़ोसियाक
चूल्हाये है, नहि चाउर-चना,

चौआन्नी धैल धरोहर है,
निरनाह दैत बच्चा सभकैं
बकरी बिगैत तँ खीर खैत
टुनमुन मालिककैं दूध पिया
धोती-पुरान रहि बेर पौत[8]

अपना कैं सुसंस्कृत-परिष्कृत विचारक मानानिहार, अन्ध स्वार्थ-परता पर राजकमल चौधरी यथार्थ चित्र खिचने छथि—

जँ सत्त बाजब अपराध नहि घोषित भेल हो
एखन धरि,
गाम आ नगरमे
सुसंस्कृत मनुक्ख आ बताह जानवर मे
कोनो अन्तर नहि, कोनो अन्तर नहि बेली-चमेली
आ अँगरेजी गुलाबक सुखाएल ठोर मे[9]

एहिना जीवकान्तक निम्न यथार्थवादी स्वर मानव-प्रकृति पर, मनुष्यक निजता पर बड़ सटीक बैसल अछि—

तोँ अपने इच्छाक पोसा कुकूर छह, मीत
आ ओकरा हाथक सिक्कड़ीमे बान्हल
ओकर पाछाँ-पाछाँ घिसिआएल जाइत छह-चँघाइत
मीत, तोँ अपने मथक पीठीपर
आँखि मुनने पड़ल छह गोहरबैत
ने देखउ चाहैत छह अपन हेराएल माथ-पएर
तोँ सड़क जकाँ मीत
पीठ ओड़ने पड़ल छह![10]

रामकृष्ण झा 'किसुन' 'जिनगी : चारिटा दृष्टिखंड' शीर्षक निम्न पाँती मे प्रगतिवादी यथार्थक वर्णन कएने छथि—

जिनगी थिक
चून देल, चुनौल
दुहू हाथक बीच पौने
रगड़-थापड़
तमाकुलकेर जूम
ठोरमे किछु काल जकरा राखि

Scanned with CamScanner

एकरा भोगि
थुकरि दैत' दि लोक
'मन' दय फेंकि"

एहि प्रकारेँ स्पष्ट होइत अछि जे मैथिली कविता मे परिवेश एवं मूल्यक संघर्ष केँ स्थान भेटब प्रारम्भ भेलैक 'यात्री' केँ एकरा राजकमल गति प्रदान कयलन्हि आ किसुन, मायानन्द, जीवकान्त सँ लऽ कुलानन्द, गंगेश गुन्जन, प्रवासी, दोषी, सुकान्त, विभूति आनन्द आदि एहि गति केँ तीव्रतर बनबैत रहलाह। जिनगीक संघर्ष केँ, क्रोध केँ, आक्रोश केँ, व्यवस्थाक विरोध मे उठल हाथ केँ, हाथ मे लेल मशाल केँ यथार्थवादी कविता अपन कथ्यक अन्तर्गत रखलक।

सन्दर्भ- संकेत

1. यात्री- काव्य-विवेचन : डॉ. यशोदानाथ झा, पृ-7
2. पत्रहीन नग्न गाछ : वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री', पृ-51
3. चित्रा : वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' (अ. भा. मै. साहित्य समिति, प्रयाग), पृ-66,6[illegible]
4. तत्रैव, पृ- 76
5. तत्रैव, पृ- 74
6. तत्रैव, पृ- 81
7. यथार्थवाद ओ आधुनिक साहित्य (चेतना समिति), पृ-71
8. तत्रैव
9. कविता राजकमल : (सम्प.) मोहन भारद्वाज, पृ-114
10. यथार्थवाद ओ आधुनिक साहित्य (चेतना समिति), पृ-72
11. मैथिलीक नव कविता : (सम्प.) रामकृष्ण झा 'किसुन', पृ-32

Scanned with CamScanner